शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

डॉ..दामोदर खडसे के उपन्यास 'भगदड़' में महानगरीय बोध

जसपालसिंग केशरसिंग वळवी (शोधार्थी)
प्रा.डॉ..संजयकुमार शर्मा (शोध निर्देशक)
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव
महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

महाराष्ट्र में साहित्य सेवा के माध्यम से हिंदी को योगदान देनेवाले अनेक साहित्यकार हैं। जिसमें एक उच्चकोटि के सशक्त कथाकार, कवि, उपन्यासकार एवं अनुवादक के रुप में डॉ.. दामोदर खडसे का नाम उल्लेखनीय है। आपके बहुआयामी व्यक्तित्व की तरह आपकी ग्रंथसंपदा भी वैविध्यपूर्ण रही है। आप एक साथ कथाकार, कवि, उपन्यासकार, अनुवादक के रुप में ख्यात हैं। आपके साहित्य में सामाजिक समस्याएँ, समाज का बदलता रूप, जीवन की व्यस्तता, महानगरीय जीवन की आपा-धापी, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक भावनाओं के संघर्ष से जुडी तमाम बातों की और ध्यान देकर आज की सामाजिक विद्रूपताओं, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक विसंगतियों को उजागर किया है। आपके प्रसिध्द उपन्यासों में कामकाजी महिलाओं की समस्या,अनैतिक पति-पत्नी संबंध, नारी शोषण, दमन, आम आदमी की पीडा आदि विविध आयामों को चित्रित किया है। आपके साहित्य में मानव के भीतर कम होती संवेदन शीलता, सहृदयता, अपनापन और मनुष्यता के प्रति छटपटाहट को सूक्ष्मता से देखा जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके उपन्यास भगदड़ में महानगरीय बोध पर विचार किया गया है

भगदड़ उपन्यास में महानगर बोध

कथाकार डॉ.दामोदर खडसे जी का अनेक विधाओं में लिखा साहित्य सुप्रसिध्द रहा है। इन विधाओं में से उपन्यास भी बहुचर्चित रहे हैं। डॉ.खडसे के प्रसिध्द उपन्यासों में 'काला सूरज' एवं 'भगदड़' है। 'भगदड़' उपन्यास सन 1996 में राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ । यह उपन्यास समकालीन परिवे श से अवगत कराता है। 'भगदड़' उपन्यास समाज के मध्यम वर्गीय परिवारों के यथार्थ का मार्मिक चित्रण है। प्रस्तुत उपन्यास की कथा एक ऐसे व्यक्ति की है , जो कस्बाई संस्कृति में पले , रचे-बसे स्कूल के हेडमास्टर पद से रिटायर्ड पेंशन पाने वाले संवेदनशील व्यक्ति महावीरप्रसाद की कथा है। 'भगदड़' के नायक महावीरप्रसाद से जुडी है, उनकी पत्नी जो ममतामयी हैं, वह पति के लिए समर्पित पत्नी है। स्वाभिमानी स्त्री हैं , माँ है। नायक के स्वाभिमान पर माँ औंर पत्नी का एकाधिकार है। उपन्यास का एक और पात्र है , कृष्णप्रसाद, जो महावीरप्रसाद का इकलौता पुत्र है तथा कस्बाई जिंदगी से महानगर मुबंई में गया और वहीं का होकर रह गया। साथ हैं कृष्णप्रसाद की नौकरीपेशा पत्नी श्वेता और नन्हीं बेटी हर्षा है। वैसे तो हर्षा केवल दो वर्ष की ही है , किंतु उसपर भी महानगरीय संस्कृति की छाप पडने लगती है। जब उपन्यास का नायक महावीरप्रसाद अनजानी बीमारी के भय से भयभीत होकर इस संभावित असाध्य बीमारी के इलाज के लिए मुम्बई अपने बेटे कृष्णप्रसाद के घर जाते है , तब जैसे ही महावीरप्रसाद और उनकी पत्नी कृष्णा के फ्लेट

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

में पहुँचते हैं , तो महानगरीय संस्कृति में बडी होनेवाली अबोध हर्षा उन्हें मेहमान कहती है- "मम्मा, मेहमान आए हैं।"1 ग्रामीण अंचलों एवं कस्बाई जिंदगी की संस्कृति एवं संस्कार होते हैं। जहां नाती-पोतों को अपने दादा-दादी , नाना-नानी के प्रति आदर सम्मान का तथा पूजनीय दर्जा दिया जाता है , वही महानगरों की चका चौंध भरी जिंदगी एवं शहरों की भाग दौडभरी जीवन शैली में संस्कृति एवं जीवनमूल्यों का विघटन होते दिखाई देता है। उपन्यासकार डॉ.दमोदर खडसे ने महानगरीय सभ्यता का पैना डंक किस तरह लहुलुहान करता है , इसका मार्मिक चित्रण किया है।

उपन्यास के नायक महावीरप्रसाद के लिए स्वयं के बेटे के घर अपनी नाती द्वारा मेहमान कहना तथा बहू द्वारा परायेपन के बर्ताव को समझना बहुत ही दर्द भरा अहसास था। डॉ..खडसे का यह उदाहरण देख सकते हैं। "महावीरप्रसाद की अनुभवी आँखें दस मिनट के इस परायेपन को अच्छी तरह ताड़ गई। बहू ने चाय दी और बिस्कुट भी। उसके जाने का समय हो गया था। वह बार-बार घडी की ओर देखती। महावीरप्रसाद ने उसे 'मुक्ति' दी 'बेटी तुम निकलो। हम नहा धो लेंगे। खाना भी है , साथ में। तुम चिंता न करों। हाँ, यदि हर्षा रुक सके तो हमारे पास छोड दो।"2 पाश्चात्य संस्कृति की नकल और भौतिक संसाधन जुटाने की अंतहीन स्पर्धा लगी हुई है , विशेषकर महानगरों में इसी यांत्रिकता और व्यावहारिकता के भावुकता और संवेदनशीलता पर हावी होते जाने की कहानी डॉ.खडसे ने इस उपन्यास के माध्यम से चित्रित की है।

उपन्यासकार ने हर पात्र के असली और कृत्रिम या नकली चेहरे को पूरी ईमानदारी के साथ उजागर करने का सफल प्रयास किया है। भीतर-ही-भीतर आहत महावीरप्रसाद और जीवन की विसंगतियों के शिकार महावीरप्रसाद की पीडा का यह उदाहरण द्रष्टव्य है - "महावीरप्रसाद की हालत बडी अजीब हो गई है। एक तो बीमारी की थाह नहीं मिल पा रही है , दूसरे इधर घरेलू मोर्चे पर कुछ तूफ़ान के आसार दिखाई दे रहे हैं। "3 महावीरप्रसाद को लगता है कि वे दोहरे हमले का शिकार हो गये हैं। एक ओर शरीर को कैंसर कुतर रहा है और भीतर बहुत गहरे मन मस्तिष्क को यह परायापन रीत रहा है। डॉ.खडसे ने यहाँ नायक की मर्माहत को बड़ी ही संवेदनशीलता से चित्रित किया है।

श्वेता के रूप में प्रेम की गहरी संवेदना और आत्मीयता महानगरों में किस तरह स्वार्थ की तंग गलियों में खो जाती है , डॉ. खडसे जी के शब्दों में, "वर्तमान से डरता हुआ आदमी हमे शा भूतकाल में घुसता है। 'अगर-मगर' से वह अपने भूतकाल से प श्चात्ताप और 'काश' से मनचाहा पाने के लिए मजबूर-सा लगता है। कृष्णा भी सोचता है , उसे माँ-सी सरल और सहज पत्नी मिलती तो कितना अच्छा होता। अभी उसे उसका अस्तित्व श्वेता के इर्द-गिर्द लिपटा लगता। उसका अहम् उसे दोयम दर्जे में ढकेल देता।"4 महानगर के आपाधापी भरे अनुभव , पती-पत्नी दोनों के कामकाजी होने और एक भ्रमित सुखी भविष्य के सपने की आस में रिश्तों की बेपर्वाही से दाम्पत्य के बिखरे सूत्रों तथा संबंध निबाह ने की लाचारी का मार्मिक चित्रण डॉ.दमोदर खडसे ने किया है। उपन्यास का वह पक्ष जिसमें पीडा से जन्मी आस्था और कस्बाई संस्कृति में पलते विश्वास से पाठक परिचित होता है। उपन्यास के अन्य पात्र विनोद और दिनानाथ पांडे हैं , जो अपने चरित्रों से संवेदना को लेकर जाते हैं।

महावीरप्रसाद के गले में तीन गांठे हैं। कैंसर की

आशंका है। वे जांच के लिए अस्पताल पहुँचते हैं, जहां बेटा कृष्णा तथा मित्र विनोद साथ जाते हैं। महावीरप्रसाद की बीमारी की आशंका की भयावहता पूरे परिवार को ग्रस लेती है और बाहरी भगदड़ के साथ-साथ शुरू हो जाती है। उपन्यास के नायक की 'मानसिक भगदड' टाटा मेमोरियल अस्पताल में जांच के दौरान संत्रास की एक लंबी प्रक्रिया से पाता चलता है कि , महावीरप्रसाद को कैंसर नहीं बल्कि टयूबरकोलेसिस या टी.बी. है। तब कहीं जाकर उपन्यास के नायक महावीरप्रसाद के कलेजे को ठंडक पहुँचती है, क्योंकि जिस आशंकित बीमारी से महानगर की भागती हुई जिदंगी की तरह उनके मन-मस्तिष्क में बीमारी को लेकर भगदड़ मची हुई थी। मानो अब वह पूरी तरह थम गई है। महावीरप्रसाद को ऐसा लगा मानो वे मृत्यु की दहलीज पर से वापस लौटे आए हों। वह कहता है कि, "ईश्वर ने यह जिदंगी किसी काम से बढायी होगी। अब गाँव-कस्बों में भी लोग ट्यूशन करके अपनी आय बढाने के पीछे हैं। मैं गरीब बच्चों को अपने घर पर पढाऊंगा।....शायद यही कुछ करने के लिए मुझे यह पुनर्जनम मिला है अन्यथा यह बीमारी तो ऐसी थी। उनका गला अचानक रुंध गया। "5 आम आदमी की निजी जिदंगी की रोजमर्रा की समस्याएं, उनकी व्यक्तिगत जिदंगी की मानसिक उलझनें, त्रिशंकु का अनुभव सब जैसे अंतर्मन से निकालकर उपन्यासकार डॉ.दामोदर खडसे ने लेखनी के माध्यम से समाज के सम्मुख रख दिया है। चाहे वह माता-पिता के मन का अंतर्द्वंद्व हो, चाहे आज्ञाकारी एवं वफादार पुत्र से रुपांतरित हुए ईमानदार पति कृष्णप्रसाद के मन-मस्तिष्क की उलझन हो, सभी कुछ जिदंगी से उतरकर लेखक की लेखनी से गुजरता हुआ एक प्रशंसनीय कृति में तब्दील हुआ यह उपन्यास हैं।

निष्कर्ष

यह उपन्यास गाँव से महानगर तक प्रत्येक मध्यमवर्गीय परिवार की कहानी है , जो अपने चारों आर के परिवे श में बिछडती संवेदना , टूटते रिश्ते, दुर्लभ होते जा रहे साधन तथा एक छत के लिए लंबी लडाई के बीची सुकून ढूंढ रहा है। 'भगदड़' उपन्यास के संदर्भ में श्याम अग्रवाल कहते हैं कि, "भगदड़' एक ऐसा कृति है, जो लिखी कम जाती है , मगर जिसे 'जीया' ज्यादा जाता है।"6

उपन्यास में व्यवस्था के प्रति आक्रोश है, तो कहीं मुक्ति की छटपटाहट, तो कहीं जीवन का उत्साह जो संघर्षों के बीच राह ढूंढ लेता है। महानगरीय जीवन की समस्या को उकेरता , रिश्ते-नाते, संवेदना, सहानुभूति को जीवित करता 'भगदड़' उपन्यास डॉ.दामोदर खडसे की अनमोल कृति है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 'भगदड़', डॉ.दामोदर खडसे, पृष्ठ क्र.09,
2 'भगदड़', डॉ.दामोदर खडसे, पृष्ठ क्र.10,
3 'भगदड़' , डॉ.दामोदर खडसे, पृष्ठ क्र.32,
4 'भगदड़' डॉ.दामोदर खडसे, पृष्ठ क्र.75,,
5 'भगदड़' डॉ.दामोदर खडसे, पृष्ठ क्र.107-108,
6 'कागज की जमीन पर , डॉ. दामोदर खडसे ' ;विसंगतियों की भगदड़ , संपा. डॉ. .सुनिल, डॉ.राजेंद्र श्रीवास्तव, पृष्ठ क्र.16